अध्याय 16

जीवन परिचय एवं सांगीतिक योगदान

पुरूषोत्तम दास पखावजी

आपका जन्म मार्ग शीर्ष कृष्ण 6, सम्वत् 1946 (1907) को नाथद्वारा (मेवाड़) में हुआ। आपके पिता घनश्यामजी एक प्रसिद्ध पखावजी और 'मृदंग सागर' नामक पुस्तक के लेखक थे, जब पुरूषोत्तम दास जी मात्र 12 वर्ष के थे तो पिता की छत्रछाया उठ गई अतः आप उनसे अधिक समय तक न सीख सके ऐसे समय में गोस्वामी री गोवर्धन लाल जी महाराज ने आपके भरण पोषण एवं शिक्षा सम्बंधी भार ग्रहण कर लिया एवं श्रीनाथ द्वारा मंदिर में नियुक्ति मिली। आप कुछ समय तक श्री नाथद्वारा मंदिर मण्डल द्वारा संचालित ''श्री नाथ संगीत शिक्षण केन्द्र'' के प्रधानाचार्य भी रहे।

दुर्लभ चित्र– पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग के साथ संगति

श्री पुरूषोत्तम जी ने 1965 में भारतीय कला केन्द्र, दिल्ली में कार्यभार ग्रहण किया। आपने 1961 से 1986 तक अखिल भारतीय हवेली संगीत समारोह का आयोजन भी किया। श्री पुरूषोत्तम जी को भारत सरकार ने सन् 1964 में 'पद्मश्री' के सम्मान से अलंकृत किया एवं राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ने सन् 1989 में सम्मानित किया। दिल्ली से सेवानिवृत्ति के पश्चात् आप श्रीनाथ संगीत शिक्षण केन्द्र श्री नाथद्वारा में प्रधानाचार्य के पद पर रहे और वही आपका 1 जनवरी 1991 को शरीरांत हुआ।

स्वामी राम शंकरदास (पागलदास)

15 अगस्त 1920 को उत्तरप्रदेश के देवरिया जिले में स्थित ग्राम (मझोली) में आपका जन्म हुआ था। संगीत कला के प्रति प्रबल अभिरूचि होने से तेरह वर्ष की किशोरावस्था में ही घर से निकल पड़े। जिस प्रकार भी जीवनयापन हो सका, अयोध्या में रहकर संगीत की प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। बिहार की रामलीला नाटक मण्डलियों में काम किया। पटना के नेपाल सिंह (अब स्वर्गीय) का प्रथम ताल गुरू के रूप में शिष्यत्व ग्रहण किया। तत्पश्चात् अयोध्या लौटकर स्वामी भगवानदास, फिर बाबा ठाकुरदास व श्री राममोहिनी शरण के निर्देशन में बीस वर्षों तक सतत् मृदंग साधना की साथ ही कई वर्ष तक पं. सन्तशरण मस्त से तबला और गायन की शिक्षा भी प्राप्त की। शिक्षा के सीढ़ियाँ समाप्त करके पागलदास पखावज के गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए संगीत यात्रा पर निकल पड़े। देशभर में घूम–घूम कर पखावज के स्वर को बुलंद किया। मृदंग तबला प्रभाकर, तबला कौमुदी आदि पुस्तकों का प्रणयन किया। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में ताल–सम्बंधी बहुत से लेख छपवाए सारा संगीत जगत इनकी साधना का लोहा मान गया। अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत हुए।

अपनी संस्था 'हनुमंत विश्व कला संगीताश्रम' अयोध्या में रहकर संगीत के अध्ययन–अध्यापन का कार्य किया मृदंग–वादन कला

को पुनरूज्जीवित करने में स्वामी रामशंकर पागलदास का असाधारण योगदान है। इसमें संदेह नहीं।

पं चतुरलाल

पं चतुरलाल का मानना था कि बोलों का निकास सफाई से हो और मुश्किल गतों के प्रस्तुतीकरण में खुबसुरती रहे। वादन का उनका ढंग निराला था। सदा प्रसन्न एवं मस्त रहने वाले पं चतुरलाल की अंगुलियां सदैव तालमय नर्तन करती रहती थी। वे जैसे ताल लय के सागर में डबे रहते थे।

पं चतुरलाल का जन्म उदयपुर में हुआ। आठ वर्ष की आयु में उन्होंने उस्ताद हाफिज मियां साहब से प्रशिक्षण लेना शुरू किया जो अर्से तक जारी रहा। उस्ताद थिरकवा खां से भी उन्होंने बहुत कुछ सीखा और पं रविशंकर जी से उन्होंने तबला संगति का तरीका सीखा। दक्षिण भारत के विद्वानों से भी उन्होंने बहुत कुछ ग्रहण किया। सन् 1948 में वे आकाशवाणी दिल्ली में कलाकार के रूप में कार्य करने लगे।

पं चतुरलाल एवं पं रामनारायण

सन् 1952 में पं ओंकार नाथ ठाकुर के साथ काबुल, 1955 में उस्ताद अली अकबर खां के साथ अमरीका, 1957 में पं रविशंकर के साथ अमरीका, कनाडा एवं यूरोप 1960 में शिष्ट मंडल के साथ मंगोलिया एवं रूस, 1962 में श्रीमती शरन रानी के साथ आस्ट्रेलिया व यूरोप तथा 1964 में अपने भ्राता विख्यात सारंगी वादक पं रामनारायण के साथ यूरोप की यात्रा की। आपके स्वतंत्र वादन व संगति के कई रिकार्ड निकल चुके हैं। पं चतुरलाल जी ने देश विदेश में काफी ख्याति अर्जित की।

गुणी वादक पं चतुरलाल 40 वर्ष की आयु में ही 14 अक्टूबर 1965 को दिवंगत हो गये।

पं. अनोखेलाल मिश्र

नाधिधिना के जादूगर नाम से संगीत जगत् में विख्यात पं. अनोखेलाल मिश्र का जन्म 1914 में ताजपुर (वाराणसी) में हुआ था। इनके पिता पं. बुद्धू प्रसाद मिश्र एक अच्छे सारंगी वादक थे। संगीत और संघर्ष का चोली दामन का रिश्ता होता है और ये दोनों अनोखेलाल जी को जैसे विरासत में मिले थे। बाल्यकाल में ही इनके माता–पिता का देहावसान हो गया था, इन अभावग्रस्त हालातों में आपकी दादी जानकी देवी ने भरण पोषण कर लालन पालन किया व तबला वादन की शिक्षा के लिए बनारस घराने के प्रतिष्ठित ताबलिक पं. भैरव प्रसाद मिश्र के चरणों में सौंप दिया। दोनों ही जल्द एक दूसरे से ऐसे जुड़ गये जैसे पुत्र और पिता।

उन दिनों अनोखे लाल जी 18–18 घंटा प्रतिदिन रियाज़ करते थे। लगभग 15 वर्षों के अनवरत् तबला अभ्यास व प्रशिक्षण ने आपको योग्य व गुणी कलाकार बना दिया। उनकी दृष्टि में यह कलाकार पर निभर करता है कि कैसे वह साधारण सी रचना को असाधारण बना देता है।नाधिंधिंना और धेरधेर किटितक जैसे सर्व साधारण द्वारा बजाए जाने वाले बोलों को उन्होनें जो लोकप्रियता और ऊँचाई प्रदान की वह किसी से छिपी नहीं है। 1953 में इलाहाबाद में आप उस्ताद विलायत खाँ के साथ संगति के लिए बैठें लगभग डेढ़ घंटे बाद दोनों ध्यानस्थ योगी की तरह संगीत समाधिक की अवस्था में पहुंच गये थे, दोनों कलाकारों का यह विकट रूप देखकर श्रोताओं में बैठें पं. ओकार नाथ ठाकुर व पं. विनायक राव पटवर्धन सीधे मंच पर पहुंचे और तबले तथा सितार पर हाथ रखते हुए बोले कि– ''अब तुम लोग बंद करो, नहीं तो कलेजा फट जायेगा।''

इसी प्रकार उस्ताद अहमद जान थिरकवा ने एक बार उनका तबला वादन सुनकर कहा था कि– ''अनोखेलाल तुम्हारा जवाब नहीं है।'' वस्तुतः वह चहुमुंखी ताबलिक थे। एक बार उस्ताद नसीर मोइनुद्धीन और अमीनुद्धीन डागर के ध्रुवपद गायन के साथ खुले अंग का तबला वादन करके लागों को चकित कर दिया था।

पं. जी को 1939 में अखिल बंगाल संगीत सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ तबला वादक घोषित किया गया था। 1950 में कोलकता में संगीत रत्न, 1952 में काठमाण्डू में तबला सम्राट, एवं काबुल में मौसिकी तबला नवाज़ से नवाज़ा गया था। 1954 में सुर–सिंगार संसद (मुम्बई) ने संगीत रत्न, एवं 1955 में मद्रास म्यूजिक अकादमी ने सर्वश्रेष्ठ कलाकार का सम्मान प्रदान किया था। गैगरीन रोग से पीड़ित पण्डित जी ने मात्र 44 वर्ष की उम्र में 10 मार्च 1958 को इस संसार को अलविदा कह दिया। वह एक धूमकेतु की भाँति आए, अपनी तेजस्विता से सबको चकाचौंध किया और अपनी छटा दिखाकर चल दिए। उनके दोनों पुत्रों पं. रामजी मिश्र और काशीनाथ मिश्र सहित अनेक शिष्यों ने उनकी परम्परा का विकास किया।

अहमद जान थिरकवा

उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद नामक स्थान पर पारम्परिक संगीतज्ञों के परिवार में सन् 1891 में जन्में अहमद जान को संगीत के संस्कार घर में ही मिले। पिता हुसैन बख्श, चाचा शेर खाँ गुणी कलाकार थे, और अहमद जान ने इन सब से सीखा, लेकिन संगीत शिक्षा की प्यास तब बुझी जब उन्होनें उस्ताद मुनीर खाँ की शागिर्दी कबूल की। तबले पर अपनी थिरकती ऊँगलियों के कारण ''थिरकवा'' नाम से प्रसिद्धि के शिखर को स्पर्श करने वाले अहमद जान को लोकप्रियता तब मिली जब उन्होनें बाल गंधर्व के प्रसिद्ध ''महाराष्ट्र नाटक कम्पनी'' में तबला वादन शुरू किया बाद में वह लखनऊ स्थित भातखंडे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक (विभागाध्यक्ष भी) पद पर आसीन हुये।

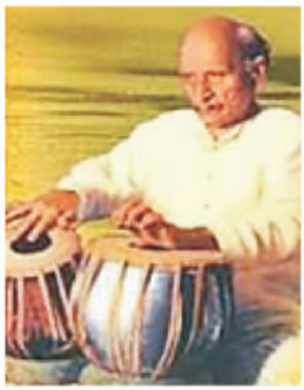

थिरकवा खाँ साहब चारों पद के तबलिये थे। स्वतंत्र वादन और संगति दोनों में ही वह दक्ष थे। दिल्ली और फर्रूखाबाद बाज उन्हें विशेष प्रिय था और इन दोनों ही वादन शैलियों में उन्हें पूर्ण दक्षता प्राप्त थी। 1953–54 में उन्हें राष्ट्रपति सम्मान मिला था। वह प्रथम ताबलिक थे जिन्हें पद्मभूषण का अलंकरण प्राप्त हुआ था।

थिरकवा साहब के वादन के कई रिकॉर्ड आकाशवाणी के पास सुरक्षित है। बड़े मुख के तबले पर उस्ताद की थिरकती ऊँगलियों का जादू किसी को भी इस तरह मग्न कर सकता था, इनके ढेरों शिष्यों में से कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार है– पद्मभूषण, निखिल घोष, लालजी गोखले, नारायण राव जोशी, अहमद मियाँ आदि।13 जनवरी 1976 को लखनऊ से मुंबई जाने हेतु वह घर से निकले और सबसे खुदा हाफिज कहकर इस नश्वर संसार से विदा हो गए।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. स्वामी रामशंकर जी वादक हैं।

   (क) पखावज वादक (ख) सितार वादक (ग) वायलिन वादक (घ) सरोद वादक

2. पखावज वादक है।

   (क) अहमद जान थिरकवा (ख) पं अनोखे लाल (ग) पुरूषोत्तम दास (घ) निखिल घोष

3. पं अनोखेलाल मिश्र किस घराने के वादक हैं।

   (क) दिल्ली घराना (ख) बनारस घराना (ग) अजराडा घराना (घ) फर्रूखाबाद घराना

4. प्रथम तबला वादक जिन्हें पद्म भूषण अलंकरण प्राप्त हुआ।

   (क) रामशंकरपागलदास (ख) पं अनोखे लाल (ग) अहमद जान थिरकवा (घ) पं चतुरलाल

5. पं चतुरलाल जी का जन्म स्थान है।

(क) उदयपुर (ख) बनारस (ग) दिल्ली (घ) मुंबई

उत्तरमाला– 1 (क) 2 (ग) 3 (ख) 4 (ग) 5 (क)

विस्तृत प्रश्न

1. उस्ताद अहमद जान शिरकवा का जीवन परिचय लिखते हुये संगीत जगत में उनके योगदान का वर्णन कीजियें।
2. निम्नलिखित संगीतज्ञों का जीवन परिचय व उनके सांगीतिक योगदान पर प्रकाश डालियें।

(अ) पुरूषोत्तम दास पखावजी (ब) पं. अनोखे लाल